CEC
२०/07/2026



# मुख्य चुनाव आयुक्तों का राजनीतिक विवाद में आना

पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त (CEC- सीईसी) एस. वाई. कुरैशी ने राजनीतिक विस्फोट वाली अपनी कुछ बातें सार्वजनिक करके चुनाव आयोग की भूमिका पर उठ रहे सवालों में नया बवाल खड़ा किया है। उन्होंने अवसर देखकर ऐसे समय में नया राजनीतिक विवाद खड़ा कर दिया है, जब चुनाव आयोग कांग्रेस समेत विपक्षी गठजोड़ इंडिया एलायंस के सभी घटक दलों के निशाने पर है।

वर्तमान मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन- SIR) अभियान के चलते पश्चिम बंगाल विधान सभा चुनाव कराने के मामले पर लगातार विपक्षी हमले का सामना कर रहे हैं। कांग्रेस नेता और लोक सभा में भी विपक्ष के नेता राहुल गांधी चुनाव आयोग पर सीधा 'वोट चोरी' तथा भाजपा के एजेंडे के अनुसार चुनाव कराने का आरोप लगा रहे हैं। सभी कांग्रेस समेत 23 विपक्षी दलों ने भारत के प्रधान न्यायाधीश जस्टिस सूर्यकान्त को सीईसी ज्ञानेश कुमार के खिलाफ पत्र लिखा है और राहुल गांधी पहले से ही चुनाव आयोग के खिलाफ 'वोट चोरी' के खिलाफ घूम-घूमकर मतदाताओं को जागरूक कर रहे हैं।

राहुल गांधी की अगुवाई में विपक्षी गठजोड़ के चुनाव आयोग के खिलाफ आक्रामक तेवर के बचाव में भाजपा एस. वाई. कुरैशी के बयानों के सहारे महसूस कर रही है। भाजपा इसका इस्तेमाल अपना रक्षात्मक कवच के रूप में कर और चुनाव आयोग के बचाव में रही है। अब दिलचस्प है कि पूर्व सीईसी कुरैशी के बयान का मानमुन सब सुनने के पहले ऐसा क्या विस्फोट कर दिया, जो प्रश्नों भी 'चोरी हंगामा' में शामिल हो गया।

~~इस संसदीय चुनाव में इसलिए पहला संसदीय चुनाव [redacted] जब लड़ा तो उसमें टिकट की माँग उनके आयोग के खिलाफ भाजपा के उचित स्थान पर 'वोट चोरी' (वोट चोरी) अभियान [redacted] चला जन्मभूमि सीट इस्तेमाल में 'चुनावचोरी' पर केन्द्रित किया और धर्मनिरपेक्ष प्रधान के और पश्चिमी यूपी, [redacted] बिहार के हंगामे में भाजपा ने एस. वाई. कुरैशी के समर्थन का अपने बचाव में इस्तेमाल करने का~~

~~[redacted]~~ पाठक पहले ये दो बातें ध्यान में रखें।

एस. वाई. कुरैशी भारत के पहले मुस्लिम मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) थे, और [redacted] चुनाव आयोग में उनका कार्यकाल 2006 से जून 2012 तक था। यह मानना अविवेकपूर्ण नहीं है, क्योंकि अपने कार्यकाल की यादों में कुरैशी ने [redacted] खुद को मुस्लिम अधिकारी और चुनाव आयुक्त के रूप में बार-बार पेश किया है। [redacted] प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह [redacted] के नेतृत्व में कांग्रेस की अगुवाई वाले संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सरकार के कार्यकाल के दौरान 2010 से 2012 तक एस. वाई. कुरैशी मुख्य चुनाव आयुक्त रहे। यह भी याद रखें कि कुरैशी ने [redacted] चुनाव आयोग की संवैधानिक मर्यादा और दायित्वों को उचित ठहराने के लिए मनमोहन सिंह मंत्रिमंडल के मुस्लिम मंत्री सलमान खुर्शीद को मोहरा बनाकर मनमोहन सिंह पर ही अपने [redacted] समर्थन को केंद्रित रखा तो यूपी की सी [redacted] ने जनवरी, 2012 को पत्र का जिक्र किया है जब उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव का समय था। उस समय केंद्रीय कानून मंत्री सलमान खुर्शीद ने उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव प्रचार अभियान के दौरान अपनी पत्नी [redacted] के समर्थन में मुस्लिम आरक्षण सम्बन्धी विवादित भाषण दे दिया।

सलमान खुर्शीद के रूप उनकी रैली को संबोधित करते हुए मतदाताओं से वादा कर दिया कि अगर उत्तरप्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनी तो मुस्लिमों का आरक्षण कोटा 4.5% से बढ़ाकर 9% कर दिया जाएगा। कुरैशी अपनी किताब में सोचा करते हैं, उनके अनुसार उन्होंने मुख्य चुनाव आयुक्त के रूप में अपने दायित्वों का निर्वाह करते हुए सलमान खुर्शीद के इस विवादास्पद भाषण को चुनाव आचारसंहिता का गंभीर उल्लंघन माना और उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई में अपने संविधान प्रदत्त अधिकार का इस्तेमाल किया। लेकिन इसके जवाब में कानूनमंत्री रहते हुए सलमान खुर्शीद ने उल्टे चुनाव आयोग पर जवाबी हमला करते हुए अधिकारों के अतिक्रमण का आरोप लगाया। चुनाव आयोग और केंद्र की सत्तारुढ़ कांग्रेस के बीच बेहद तनातनी की नौबत आ गयी।

एस. वाई. कुरैशी के अनुसार सी.ई.सी. के रूप में उन्होंने राष्ट्रपति को कानूनमंत्री सलमान खुर्शीद के खिलाफ लिखा और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से मुलाकात की। लेकिन कुरैशी, प्रधानमंत्री अपने पार्टी नेताओं और मंत्रियों द्वारा चुनाव आयोग की आलोचना से काफी परेशान नजर आए तथा इस बात से इनकार किया कि उन्होंने ऐसे हमलों के लिए अधिकृत किया हो। पूर्व सी.ई.सी. लिखते हैं कि उनसे मुलाकात के दौरान मनमोहन सिंह ने चुनाव आयोग के प्रति संवैधानिक संस्था के रूप में सम्मान भाव रखने के बजाए सिर्फ अपने मंत्रियों के खिलाफ गुस्से का इजहार किया। इसके बाद खिन्न मनमोहन सिंह ने उचित रूप से टिप्पणी की— "अगर यह बात है, जो आप सोचते हैं तो मैं खुदकुशी कर लूंगा" के विषय में कह— "यह संस्था और भारतीय निर्वाचन आयोग हमारे लोकतंत्र की आत्मा है।" मनमोहन सिंह की इन्हीं दोनों पंक्तियों को एस. वाई. कुरैशी ने संविधान पोर्टल पर डाला है।

कुरैशी के अनुसार यह बात मनमोहन सिंह ने अपने मंत्रियों के गैरजिम्मेदाराना टिप्पणियों से परेशान होकर गुजरात के सीएम रहते हुए मैं आत्महत्या नहीं करूंगा और चुनाव आयोग को हमारे लोकतंत्र की आत्मा बताया।

पूर्व सीईसी ने अपनी इन यादों के माइने में भी कांग्रेस के समय से चुनाव आयोग के बचाव को मोड़ा है, जिसे राजनीतिक विस्फोट माना जा रहा है। कुरैशी के अनुसार यह प्रसंग जनवरी, २०१२ उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव के समय का है, जब उन्होंने मुस्लिम आरक्षण कोटा बयान के खिलाफ कानून मंत्री सलमान खुर्शीद की चुनाव आचारसंहिता उल्लंघन के मामले में शिकायत की थी। गौरतलब है कि रिटायरमेंट के 14 साल बाद पूर्व सीईसी एस. वाई. कुरैशी ने ऐसे समय में यह राजनीतिक विस्फोट किया है, जब जनवरी, २०२६ में उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव होने वाला है। कुरैशी ने अपनी किताब मार्केट में आने से एक पखवाड़ा पहले खोजी मीडिया के 'सेलिंग प्वाइंट' पर इन विवादास्पद बातों को सार्वजनिक किया और संसद का मानसून सत्र शुरू होने से लगभग एक हफ्ता पहले यह प्रसंग सुर्खियों में आया।

कांग्रेस के किसी बड़े नेता ने कुरैशी की प्रसारित विचार यादों को नोटिस भी नहीं किया और कोई टिप्पणी नहीं की। उस वक्त प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के प्रधान सचिव रहे टी.के.ए. नायर और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार शिवशंकर मेनन दोनों ने भी इस पर चुप्पी साध रखी है।

कांग्रेसजनों ने कुरैशी के खुलासे की प्रामाणिकता पर सवाल उठाया है और इसके वास्तविक तथ्य का कोई आधार नहीं माना है, कांग्रेस की तब तीखी प्रतिक्रिया सामने आई, जब भाजपा ने एस वाई कुरैशी के खुलासे को अपना और चुनाव आयोग के बचाव में ढाल के रूप में इस्तेमाल करने का प्रयास किया। भाजपा के IT (आई टी) सेल प्रमुख अमित मालवीय ने तुरंत इसी आधार पर कांग्रेस के खिलाफ जवाबी हमला करते हुए कहा कि चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठाने का कांग्रेस का पुराना इतिहास रहा है मालवीय ने एस. वाई. कुरैशी का हवाला देते हुए कहा कि कांग्रेस नीत यू पी ए गठजोड़ जब सत्ता में थी तो इसके मंत्रियों ने बार-बार चुनाव आयोग को निशाना बनाया। मालवीय ने कहा कि कुरैशी के तथ्यों से जाहिर है कि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह संवैधानिक संस्थाओं पर हमला करने वाले अपने मंत्रियों के आगे असहाय थे। कांग्रेस का रवैया बदला नहीं है, जब सत्ता से रहती है और चुनाव परिणाम इसके खिलाफ जाते हैं तो चुनाव आयोग को इसके लिए जिम्मेदार ठहराती है।

इसके जवाब में कांग्रेस राष्ट्रीय सचिव प्रणव झा ने कहा कि कुरैशी के 2012 प्रसंग की आड़ लेकर भाजपा देश के सामने गंभीर प्रश्नों से मतदाताओं का ध्यान हटाना चाहती है। कांग्रेस ने हमेशा चुनाव आयोग का भारत के संवैधानिक लोकतंत्र के आधारभूत खंभे के रूप में सम्मान किया, यह भाजपा है, जो चुनाव आयोग को अपनी विभाजनकारी राजनीति का उपकरण बनाने के प्रयास में जुटी है।

→ o

→ ° पहले से ही मची आ रही चुनाव आयोग के

खिलाफ 'वोट चोरी' संसद के मानसून

सत्र में प्रतिपक्ष संग्राम चुनाव परिणाम के बाद भी, इसकी

गूंज आ रही है। अयोध्या राम जन्मभूमि क्षेत्र में 'चढ़ावा चोरी', और

पर्चा लीक और कुछ कुरुक्षेत्र केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र

प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर आन्दोलन कर रहे छात्र

वांगचुक की शारीरिक जंतर-मंतर से दिल्ली पुलिस द्वारा नाटकीय ढंग से

उठाकर अस्पताल ले जाने पर संसद के हंगामे में कुरैशी

साथ किए गए खुलासे या भाजपा सांसद के रही है

जबकि विपक्ष के रक्षा मंत्री की अध्यक्षता में आयोजित सर्वदलीय

सत्र से पहले होनेवाली सर्वदलीय बैठक में शामिल न होकर

इससे 19 जुलाई को ही संसद को आगाह कर दिया था।

भाजपा द्वारा कुरैशी के खुलासे का खण्डन पहले का कारण

भाजपा द्वारा कुरैशी के खुलासे का प्रतिरोध कि एस. वाई. कुरैशी चुनाव आयोग

चौबारहवीं तैनात होगी है क्योंकि एस. वाई. कुरैशी चुनाव आयोग

के लेकर चुनाव से सम्बन्धित भाजपा के सभी दावों की पुरजोर

खिलाफ करते रहे हैं। हमेशा मीडिया में चर्चित रहनेवाले एस. वाई.

कुरैशी ने विशेष गहन पुनरीक्षण (एस आई आर) के तरीके पर सवाल

उठाया। मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों की

चयन समिति में प्रधानमंत्री के अलावे भारत के प्रधान न्यायाधीश

को शामिल करने के सुप्रीम कोर्ट के आदेश की अवहेलना करने के

लिए विधायिका के जरिए उनकी जगह किसी केन्द्रीय मंत्री को

रखनेवाले नरेन्द्र मोदी सरकार के साथ-साथ एस. वाई. कुरैशी ने अनुचित

बताया। ————→ °

→ एस॰ वाई॰ कुरैशी ने सबसे पहले कुप्रवृत्तियों की पहचान और निदान बाहर करने का अभियान, खास अल्पसंख्यक समुदाय को लक्ष्य करके चलाये गये भाजपा और संघीय गणतांत्रिक संयोग स्वरूप के मैसेज की आलोचना की। इसकी प्रतिक्रिया में झारखंड से भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने कुरैशी को मुस्लिम चुनाव आयुक्त बताया। कुरैशी के पक्ष एक ही शिकायत की। 

एस॰ वाई॰ कुरैशी ने अपनी किताब का नाम रखा है — भारत और मैं: एक की चार, संस्मरण नहीं। उन्होंने कांग्रेस शासनकाल में कोई महत्वपूर्ण पद नहीं लिया, ताकि मुस्लिम तुष्टीकरण का आगरा उनके का आरोप न लगे। 2019 में नरेंद्र मोदी शासनकाल में चुनाव थी। प्रधानमंत्री सुषमा स्वराज का पुरस्कार, महानिदेशक बनने का प्रस्ताव कुरैशी ने मुस्लिम होने के कारण स्वीकार नहीं किया।

सीईसी के रूप में कुरैशी ने कई चुनाव सुधार किए। 25 जनवरी को चुनाव आयोग का स्थापना दिवस मतदाता दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत उन्होंने ही की।

ऐसी साफ-सुथरी छवि वाले कुरैशी का ऐसे खुलासे और उनका समय, अवसर को लेकर अटकलबाजी नाथी है।

कुरैशी के पूर्ववर्ती मुख्य चुनाव आयुक्तों के ये कुछ ही राजनीतिक तरफदारी में कांग्रेस और भाजपा दोनों की विवादित हिस्सेदारी रही है। 2009 लोकसभा चुनाव जब करीब आनेवाला था, उस समय भाजपा समर्थक मुख्य चुनाव आयुक्त एन. गोपालस्वामी ने भाजपा नेता अरुण जेटली और जसवंत सिंह के आवेदन पर चुनाव आयुक्त नवीन चावला को हटाने की सिफारिश राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल के पास भेज दी थी, क्योंकि नवीन चावला कांग्रेस समर्थक थे और 2009 में वे ही सीईसी बन जाते। राष्ट्रपति ने जब सिफारिश ठुकरा दी तो अरुण जेटली कुपीत हो गया →

→ ① भाजपा नहीं चाहती थी कि सीईसी नवीन चावला की देखरेख में 2009 लोकसभा चुनाव हो, लेकिन भाजपा की इच्छा पूरी नहीं हुई। क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने दोनों भाजपा नेताओं को यह कहकर लौटा दिया कि यह अधिकार सीईसी और राष्ट्रपति का है। (इस समय सीईसी को यह अधिकार नहीं प्रदान किया गया था) 2009 में कांग्रेस गठजोड़ सरकार सत्ता में लौटी और भाजपा नेताओं ने ईवीएम में छेड़छाड़ का आरोप लगाकर देश भर में अभियान चलाया। एन. गोपालास्वामी अभी भी भाजपा के उन चुनावी कदम का समर्थन कर रहे हैं। एक कांग्रेस हिमायती सीईसी मनोहर सिंह गिल, रिटायर होने के बाद मनमोहन सिंह की सरकार में केंद्रीय मंत्री रहे।

---

Email addresses —

① navneet@dbcorp.in ] साथ भेजें
bhaskar@dbcorp.in ]

② chemdharsharma@gmail.com

③ haribhoomi@gmail.com

④ editorial@sanmarg.in

⑤ dtmagazine@tribunemail.com

⑥ delhi@prabhatkhabar.in

⑦ dainikpurvoday@gmail.com

⑧ Mobile- 6393076351 (whatsapp)